(1)

Stop

## Ch (2) (E) (Artisans) 16April

### शिल्पकारी / दस्तकारी / कारीगारी

कई जनजातियाँ ऐसी है जो परम्पारिक पेशा, कारीगारी या दस्तकारी रही है। जैसे :- कपड़ा बनाना, लौ उपकरण बनाना, बाँस की टोकरी, चटाई, झाड़ु, लकड़ी का औजार बनाना आदि उदाहरण के लिए छोटानागपुर की लोहरा, करमाली जनजातियों की मुख्य पेशा लौ उपकरणों का निर्माण एवं उनका मरम्मत करना रही है। चिक-बड़ाईक, जनजाति मुख्य पेशा वस्त्र निर्माण करके बेचना रही है। ~~महली~~ महली जनजाति की मुख्य पेशा घास, बाँस, पत्ती आदि के सहारे विभिन्न आकार-प्रकार की टोकरी का निर्माण करना रही है। झारखण्ड की असुर तथा मध्य प्रदेश से की अगारिया जनजातियों की पारम्पारिक पेशा लोहा गलाना रही है। कश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश की गुजर जनजाति एवं हिमाचल प्रदेश की किन्नौरी जनजाति की परपरागत पेशा लकड़हारा एवं बढ़ाईगीरी रही है।

Date __/__/__

राजस्थान की गदोलिया लोहार की मुख्य पेशा लोहारगीरी रही है।

दस्तकारी या शिल्पकारी कार्य में लगी हुई जनजाति-यों के औजार बिल्कुल सरल रहते है। उनकी पेशा से सम्बन्धित वस्तुएँ आस-पास की पर्यावरण में उपलब्ध हो जाते है। उन्हे कच्चे मालों के लिए कुछ चुकाना नही पड़ता है। लेकिन आजकल इन्हे लकड़ी, लोहा, रूई आदि खरीदना पड़ता है। औद्योगिक विकास तथा उद्योगो द्वारा सस्ती किमतों पर माल उपलब्ध हो जाने के कारण इन जनजातियों के समक्ष अस्तित्व संकट उत्पन्न हो गया। अब मजदूरी करना ही इनकी नियती बनती जा रही है। अब तक इन जनजातियों के लिए अलग अलग से कोई विकास कार्यक्रम नही चलाऐ गये है। इसके कारण ये लोग पिछड़े ही रहने को विवश हो। एक जनजातिय पेशा के साथ-साथ जनजातिय कला के ऊपर भी अस्तित्व संकट उपस्थित हो गया है।

इस शिल्पकारी या कारीगारी कार्य में लगी हुई सभी परिवार का पूर्ण सहयोग उनके उत्पादन में शामिल रहता है। वे लोग अपने उत्पादन में बच्चों एवं महिलाओं की सेवा का प्रयोग करते हैं। Stop

Scanned with CamScanner